ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

फतेहपुर की नेवटिया हवेली पर अंकित भित्ति चित्रों का सांस्कृतिक स्वरूप

Cultural Nature of Wall Paintings Inscribed on Nevatiya Haveli at Fatehpur

Paper Submission: 15/10/2020, Date of Acceptance: 26/10/2020, Date of Publication: 27/10/2020

ऋचा चौधरी
शोध छात्रा,
इतिहास विभाग,
एम.डी.एस. विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

लता अग्रवाल
सहआचार्य,
इतिहास विभाग,
एस.पी.सी. राजकीय
महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

राजपूताना के सांस्कृतिक परिदृश्य में शेखावाटी की स्थापत्य कला सांस्कृतिक व कलात्मक दृष्टि से ऐतिहासिक रहीहै। यहॉ के गढ़–किलों व हवेलियों की दिवारों पर अंकित चित्र समाज के सांस्कृतिक स्वरूप को अभिव्यक्त करते है जो समाज में प्रचलित रीति–रिवाज, परम्परा व धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं। भित्ति चित्र लोक संस्कृति के वाहक होते है। जयपुर राज्य का ठिकाना सीकर के क्षेत्र फतेहपुर में सेठ हनुमानप्रसाद नेवटिया ने 1878 ई. में अपने निवास के लिये हवेली का निर्माण करवाया जिसकी भित्तियों पर विभिन्न सांस्कृतिक और देवी–देवताओं के चित्रों को अंकित किया गया। इस हवेली का तिजारा वास्तुशिल्पी बालूराम जी थे और भित्ति चित्रों के चित्रकार नसरूद्दीन थे। इस हवेली की लम्बाई 70 मीटर और चौडाई 50 मीटर है। इसमें दो चौक और आठ कक्ष बने हुए हैं। चौक हवेली का खुला आंगन व केन्द्र बिन्दु होता था जिसका उद्देश्य हवेली के सार्वजनिक और निजी कक्षों के मध्य सामनजस्य स्थापित करना था। इस आंगन में रोजमर्रा की गतिविधियों को पूर्ण किया जाता था। हवेली के भित्ति चित्रों के दृश्यांकन में राम और कृष्ण की जीवन कथाओं को अंकित किया गया है। साथ ही स्त्री–पुरूषों की वेशभुषा, शारीरिक सौष्ठव, श्रृंगार आदि को इटालियनफ्रेस्कोस द्वारा प्राकृतिक रंगों नीला, लाल, हरा आदि के माध्यम से चित्रांकित किया गया है। राधा की ओढ़नी को चारों तरफ से सुनहरी किनारे वाली दर्शाई गई है। साथ ही राधा–कृष्ण द्वारा धारण किये गये अलंकारों को भी बहुत ही बारिकी से चित्रित किया गया है। भित्ति चित्र प्रायः हवेली के कक्षों और बाहरी दिवारों पर विभिन्न रंगों के द्वारा चित्रांकित कर फतेहपुर की नेवटिया हवेली को आकर्षक बनाया है। हवेली के भित्ति चित्रों को बडे विस्तार के साथ बलुआ पत्थर पर चित्रांकित किया गया जिसमें दिवार, झरोखे और मेहराबों का चित्रांकन सांस्कृतिक दृष्टि से अलंकृत है।

The architecture of Shekhawati in the cultural landscape of Rajputana has been culturally and artistically historic. The paintings on the walls of the fort and havelis of the place express the cultural form of the society, which is a symbol of the customs, traditions and religious beliefs prevalent in the society. Wall paintings are carriers of folk culture. Seth Hanuman Prasad Nevatiya constructed this haveli in the Sikar region of Jaipur state in Fatehpur in 1878 AD for his residence, which has various images depicted on it e.g. Goddess and images of cultural importance. Mr. Baluramji was the chief architect of this haveli and Mr. Nasrudeenwas the painter. The length of this haveli is 70 meters and width is 50 meters. It consists of two chawks and eight chambers. The chawk of haveli had an open courtyard and focal point, which was intended to establish harmony between the public and private rooms of the haveli. Everyday activities were completed in this courtyard. Life stories of Rama and Krishna have been depicted in the various paintings of the haveli. In addition, the costumes, physiological and anatomical aspects, and adornments etc. of men and women have been depicted through using the natural coloursi.e. blue, red, green etc. inItalian frescos style. Radha'sodhani is depicted with golden edges from all sides. At the same time, the ornaments worn by Radha and Krishna are also depicted very frequently. The inner and outer walls of the Nevatiyahaveli, Fatehpur are so beautifully decorated with different coloursthat they have enhanced its beauty.The pictures of the haveli are painted on sandstone with large detail in which the walls, arches are culturally ornamented.

मुख्य शब्दः हवेली, भित्ति चित्र, संस्कृति, पौराणिक कथाओं।
Haveli, Wall Paintings, Culture, Mythology.

प्रस्तावना

कला[1] मानव मन के निरन्तर चिन्तन एवं दर्शन की निधि तथा कौशल की प्रक्रिया से युक्त सुन्दर व सुखद सृजन का स्वरूप होती हैं।धर्म,दर्शन,आध्यात्म व साहित्य की अभिव्यक्ति कला द्वारा ही संभव है।जिसे चित्रकार ने तूलिका या ब्रुश तथा विभिन्न रंगो की सहायता से हवेलियों[2] की भित्तियों पर अपने मनोभावों की वृत्ति को चित्रांकित किया।फलतः भित्ति चित्रकला को नया आयाम प्राप्त हो सका।भारत के पश्चिम में स्थित राजपूताना के जयपुर रियासत के शेखावाटी क्षेत्र के प्रमुख ठिकाने सीकर में आर्थिक दृष्टि से समृद्ध व्यापारियों ने अपने आवासीय भवनों को आरामदायक व हवादार बनाने के लिए जिस नवीन स्थपात्य शैली में इमारतें निर्मित करवाई वो हवेलियॉ कहलाई। इनको आकर्षक व सौन्दर्य प्रदान करने के लिए इनकी भित्तियों पर विभिन्न रंगों के द्वारा सूक्ष्म लकीरों से चित्रांकित कर अलंकृत करवाया।हवेलियाँ सिर्फ आवास का साधन ही नहीं व्यावसायिक स्थल का भी समावेश लिए होती थी। इनकी बनावट इस तरह से की जाती थी कि बाहर के हिस्से में आगंतुक व्यापारी अपने सहायकों सहित ठहर जाते थे। उनका सामान व वाहन रखने का भी पर्याप्त स्थान बना होता था। इन हवेलियों को नवोढ़ा दुल्हन की तरह सजाया जाता था। आज हवेलियाँ स्थापत्य व भित्ति चित्रों के साथ अपने सुनहरे अतीत के गौरव को दर्शाती शान से खड़ी हैं, जिन्हें देख पर्यटक आश्चर्य विभोर हो जाते हैं। इन भित्ति चित्रों के कारण इस अंचल को ओपन आर्ट गैलरी (Open Art Gallery) की संज्ञा दी जाती है।[3]

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य नेवटिया हवेली, फतेहपुर के भिति चित्रों के विश्लेषण के माध्यम से चित्रों मे प्रयुक्त तकनीक, रंगों के संयोजन, ऐतिहासिक महत्व को प्रकाश में लाना तथा पुरामहत्व की धरोहर के संरक्षण के लिये जनमानस में जागरूकता पैदा करना और पर्यटन के दृश्यपटल पर विषयों को रखना रहा है।

भिति चित्रों का विश्लेषण

जयपुर रियासत की निजामत सीकर[4] के क्षेत्र फतेहपुर में 1878 ई.में व्यापारी श्री हनुमान प्रसाद नेवटिया ने मंडावा रोड, गोयनका सती मन्दिर के पास 27˚59˚59˚उत्तर अक्षांश एवं74˚57˚36˚ देशान्तर पर हवेली की इमारत निर्मित करवाई जो नेवटिया हवेली के नाम से प्रसिद्ध हुई।इस हवेली की लम्बाई 50 मीटर तथा चौडाई 40 मीटर हैं। इस हवेली के निर्माण के लिए स्थानीय चूना तथा मकराना व नागौर के पत्थर उपयोग में लाए गए।हवेली का प्रवेश द्वार,कक्षों व खिड़कियों के दरवाजों के लिए इमारती लकड़ी म्यांनमार (बर्मा) से, पीतल व लोहा अन्य राज्यों से तथा बेल्जियम से काच आदि आयातित किये गये। हवेली की स्थापत्य कला का स्वरूप बिसाउ कस्बें के प्रमुख कारीगर बालूराम तथा हबीबुल्ला के साथ लगभग सौ से अधिक कारीगरों ने तैयार किया। इस हवेली केझज्जों,मेहराबों,झरोखोंऔर बरामदों की भित्तियों के प्लास्टर पर विभिन्न रंगो से चित्रांकित चित्रों में लोकजीवन की संस्कृति, राधा–कृष्ण की रास लीला, लोक–भावना, प्राकृतिक व आन्तरिक सौन्दर्य भाव,यात्रा विवरण,बारीक लकीरों की अनुकृतियॉ, अंग–प्रत्यगों के उभार के साथ चेहरों की भाव–भंगिमा, पशु–पक्षी तथा पेड़–पौधे आदि का चित्रांकन कलात्मक रुपसे आकर्षक हैं।

भित्तिचित्रों के लिये मूल रूप से महरून, नीला, लाल, हरा, पीला, काला, गुलाबी, मटमैला आदि विभिन्न बहुरंगों का प्रयोग किया गया है। यह रंग प्राकृतिक रूप से फुलों, पत्तियों, फलों और खनिजों से निर्मित किये गये। कुछ रंगों को मिट्टी, पत्थर, चूना व तेल के मिश्रण तथा कोयला, राख, कत्था आदि से बनाया गया। हवेली की पाषाण दिवारों पर चूने का प्लास्टर किया जाता था जिस पर चित्रांकन से पूर्व एक सतह तैयार करने के उपरांत चित्रों को उकेरा जाता था। यह प्रणाली फ्रैस्को[5] चित्र प्रणाली कहलाती है। इसमें मार्बल, सीप (Shell),चीनी, चूने के पाउडर को मिलाकर तैयार सतह पर चित्रांकन किया जाता था।यह प्रणाली गीले चूने पर प्रयोग मे लाई जाती थी और सूखे प्लास्टर पर सैको[6] प्रणाली के द्वारा चित्रांकन किया जाता था। इस हवेली में हिन्दू, मुगल और यूरोपियन मिश्रित चित्र शैली का प्रयोग किया गया। मुख्य द्वार विशाल तथा लकड़ी की चौखट से बने है इस पर बारीक नक्काशी की गई है जिसमें फूल–पत्ती, प्रतीक चिन्ह, पशु–पक्षियों की आकृति तथा हाथी की सूंड व पक्षियों की चोंच आदि उत्कीर्ण है। मुख्य द्वार के ऊपर मिट्टी से निर्मित गणेशजी की प्रतिमा छोटे से आले में विराजमान की गई है। दिवारों पर छज्जे बने हुये हैं और टोडों पर झरोखे निर्मित हैं। प्रवेश द्वार के बाद खुला प्रथम चौक आता है जो परिवार के पुरूषों के उठने–बैठने व चर्चा का स्थान होता था। इसके दांयी ओर अतिथियों के लिये 20X20 फीट लम्बा–चौड़ा कक्ष निर्मित है। कक्ष की खिड़कियों पर छोटे नीले, पीले, लाल, हरे रंग के बेल्जियम ग्लास लगे हुये है। खिड़कियो में लकड़ी व पीतल के नक्कासीदार दरवाजे हैं। कक्ष के चारों ओर की भित्तियों को फूल–पत्तियों से चित्रांकित किया गया है। कक्ष के बाहर द्वारपाल का चित्र बनाया गया है जो हाथ में डंडा लिये हुये खडा है। चौक के दांयी ओर शयन कक्ष, पूजा कक्ष, रसोई कक्ष और पानी रखने का स्थान परिन्डानिर्धारित था। सामने की ओर चार कक्ष निर्मित हैं। दो कक्षों के मध्य दूसरे चौक में जाने का रास्ता है। दूसरे चौक में जाने के लिए बड़ा दरवाजा है जिसकी चौखट बारीक नक्काशी से निर्मित है। चौक के दोनों ओर बैठने के लिये छतरीनुमा चबुतरा तथा रसोईघर स्थित है। इस चौक के चारों ओर 10X15 फीट के 8 कक्ष बने हुये हैं जो शयन, घरेलू सामान एवं व्यक्तिगत प्रयोग के लिये काम में लिये जाते थे। जिसमें से चार कक्ष महिलाओं के लिये सुरक्षित थे। हवेली की छत ऊॅची मुंडेरो से सुसज्जित है। जिनमें छोटे झरोखे1X1 फीट के हैं जहॉ से परिवार की महिलाऐं मुख्य मार्ग की ओर देख सकती थी।हवेलियों में खुला आंगन, विशाल द्वार तथा जालीदार खिड़कियों की बनावट होने से हवेली में चारों ओर से हवा का प्रवाह

रहने के कारण वहॉ का पर्यावरण स्वास्थ्यवर्धक रहता था।[7]

सीकर ठिकाने की भित्तिचित्रांकन परम्परा में समसामयिक समाज के विविध वर्गो के जीवन व्यवहारों का चित्रांकन रोचक दृष्टि से हुआ है। नेवटिया हवेली में बने राधा–कृष्ण की रास लीला के भित्तिचित्रों में जो उनकी वेशभूषाएं दर्शायी गई है, उनमें उन्हें देवत्व वर्ग से सम्बन्धित होने का परिचय मिलता है। इसी तरह से यहां बने विभिन्न महारावलों के व्यक्तिचित्रों को देखकर भी उनके उच्च कुल में जन्म लेकर मर्यादाओं का प्रतिनिधित्व करने का परिचय मिलता है। यहां बने इन भित्तिचित्रों में स्त्री व पुरूषों की वेशभूषाएं एवम् आभूषणों को देखकर उनके मध्यम वर्ग के होने का तथा द्वारपाल व दरबारियों की वेशभूषाएं एवम् आभूषणों के अलंकरण को देखकर उनके सामान्य वर्ग से सम्बन्धित होने का परिचय मिलता है। आर्थिक दृष्टि से समृद्ध वर्ग के सेठों काआरामदायक जीवन का दृश्यांकन भी इस हवेली में दृष्टिगत होता है।स्त्री–पुरूष की वेशभूषाओं में स्त्री को राजपूती घाघरा, ओढ़नी और कांचली नामक वस्त्रों में चित्रांकित किया हैऔर पुरूषों को जूती, पजामा, शेरवानी, कमरपट्टा और साफा आदि वस्त्रों[8] से सुसज्जित किया गया है। राधा–कृष्ण और गोपियों की रासलीला के चित्र में राधा को नीले रंग की ओढ़नी के चारों ओर सुनहरी किनारी के लेस है तथा उस पर चमकिले सितारे दर्शाये गये है और गोपियों की ओढ़नी लाल–महरून रंग की सादी ओढ़नी है और किनारी पर चमकदार लेस है। राधा की कांचली पर रंगबिरंगे सितारे है और गोपियो की कांचली सादी है। राधा और गोपियों ने लहरदार घाघरा (लहंगा) पहना हुआ है। राधा के घाघरे पर सुनहरी लेस चित्रांकित है। राधा की केशसज्जा आकर्षक है। शीशफूल, बोर, कर्णफूल, नथणी, गले में हार, भुजाओं में भुजबंध, कलाई में कंगन–चूडियॉ, कनकती तथा पैरों में भारी पायल पहना रखी है। गोपियों के आभुषण भी इसी रूप में दृष्टिगत है। पैरों में जूतियॉ पहनी हुई नही है। कृष्ण लाल रंग का अंगरखा,जिस पर चौड़ी सुनहरी लेस लगी हुई है, कमर पर दुपट्टा, गले में हासली, चेहरा नीले रंग का और इसके ऊपर सुनहरा मुकुट व कंलगी तथा मोरपंख से सुसज्जित हैं। कृष्ण ललाट पर गोरोचन तिलक धारण किये हुये हैं। आभा मण्डल से कृष्ण का स्वरूप देवत्व रूप में सुशोभित है। राधा–कृष्ण के पास सफेद रंग की दो गायें खड़ी है। राधा–कृष्ण मध्य में खडे है और चारों ओर गोपियॉ व कृष्ण की छवि एक–दूसरे का हाथ पकड़ कर नृत्य रूप में चित्रांकित किया है। इनके चारों ओर बांसूरी, ढोलक, वीणा, सारंगी, मंजिरे व अन्य वाद्ययंत्रों को बजाते पुरूषों को चित्रांकित किया गया है।[9]

हवेली के प्रवेश द्वार के ऊपर सिन्दूरी रंग के गणेश जी विराजमान है, उनके दोनों ओर रिद्धी–सिद्धी चंवर ढूला रही है। इस हवेली में राधा–कृष्ण को अधिक चित्रांकित किया गया है। साथ ही माता लक्ष्मी जो चारभूजा के रूप में कमल पर खडी हुई दृष्टिगत है। साथ ही एक नाव में राधा–कृष्ण बैठे हुये है और भाई बलराम उस नाव के नाविक है। एक चित्र में राम–लक्ष्मण वन में विचरण कर रहे हैं। उनके सामने बाली–सुग्रीव का द्वन्द युद्ध हो रहा है और राम एक पेड़ की ओट से उसे देख रहे है। वे छिपकर बाली पर तीर चलाने का प्रयास कर रहे है। दो हाथी अपनी सूंड में पानी भरकर राधा–कृष्ण के ऊपर डाल रहे है। ये चित्रांकन स्थानीय देवी–देवताओं के प्रति आराध्य का प्रतीक रहे। भित्तिचित्रों में त्यौहार और सांस्कृतिक पर्वोत्सवों पर राज्य द्वारा हाथी, घोडे व ऊँटों को वस्त्राभूषणों से अंलकृत किया जाता था। इन पर लाल, नीला मलमल या रेशम के कपड़ों कीझूल डाली जाती थी। जिन पर आकर्षक डिजाईन में सुनहरा जड़ाऊ कार्य किया गया है।[10] दिवार पर चित्रांकित चित्र से प्रतीत होता है कि सेठ–सेठानी श्रृंगार किये हुये ऊँट पर बैठे हुये है। सेठानी श्रृंगार कर हाथ में पुष्प लेकर बैठी हुई है। सेठजी ने पैरों में जूतियॉ पहन रखी है और सेठानी के पैरों में जूतियॉ नही है उनके पीछे दो सैनिक घोड़े पर सुरक्षात्मक रूप से हाथ में भाला लेकर चल रहे है। एक खिडकी के बाहर केभित्तिचित्र में सेठजीहाथ में छतरी लेकर अपनी सेठानी के साथ खड़े हैं।

भित्तिचित्र में मुस्लिम पोशाक को भी दर्शाया गया है जिसमें एक मुस्लिम महिला चूड़ीदार पजामा, कुर्ता और चुन्नी पहने हुये है। चुन्नी सिर को ढ़कती हुई नीचे की ओर जा रही है। इस महिला के पैरों में भी चप्पल या जूती नहीं है। एक अन्य चित्र में ब्रिटिश महारानी सफेद और स्लेटी रंगों के गाऊन में कुर्सी पर विराजमान है, उसके पास में दायीं ओर एक पुरूष सफेद वस्त्र पहने हुये खड़ा है जिसके बाये हाथ में नीचे की ओर झुकती हुई खुली तलवार है और पैरों में घुटने तक चमडे के काले जूते पहने हुये है। फलतः मुस्लिम–ईसाई संस्कृति का भी निरूपण किया गया है।

निष्कर्ष

भित्ति चित्रों के द्वारा इस हवेली का सांस्कृतिक महत्व बढ़ने लगा, जिसे प्राकृतिक, व्यक्तिगत, सामुहिक, धार्मिक, पशु–पक्षी (तोता, कोयल, मोर और कौआ), पुष्पटहनी, वृक्ष आदि के चित्रण में चित्रकार ने कुशलता से अभिव्यक्त किया है। व्यक्ति के मनोभावों के साथ–साथ बहुआयामी स्वरूप प्रस्तुत करने से चित्रकला की महत्ता, उत्कृष्टता एवं हृदयग्राहकता की अनुभूति इनमें चित्रांकित है। अलंकरण प्रधान शैली, सौन्दर्य, अनुप्रेक्षणीय व्यक्तित्व का चित्रांकन और अलंकरण की विशेषता सर्वत्र दृष्टिगत है। ज्यामिति चित्रात्मक रेखा चित्रों का कौशल एवं भावुकता के साथ चित्रित किया गया है। रेखाचित्र, वर्ण और भाव चित्रशैली को अनुप्राणित करते हैं। चित्रों का चित्रांकन संयत, शान्त, सुरूचि पूर्ण है जिसे चित्रकार ने कूची (ब्रुश) के स्पर्श की कोमलता और चित्रों के चारों ओर हासिये (फ्रेम) की चित्रकारी से व्यक्त करने का प्रयास किया है। भित्तिचित्रों में प्रयुक्त रंग शीतलता प्रदान करने वाले है। स्त्री–पुरूष का शारीरिक सौष्ठव सुन्दर है। नारी चित्रण में श्रृंगार को महत्व दिया गया है। नारी का आभायुक्त चेहरा, ऊँचा ललाट, बडी मीनाकृत मादक ऑखे, भंवें किंचित उठी हुई, सुडौल नाक, बंधे हुये केश, लालीमायुक्त कपोल व अधर आदि का चित्रांकन कलात्मक है। रेखाओं की तरलता,भावात्मकता, भक्तिभाव और प्रकृतिपरक चित्रों का चित्रांकन सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त रूचिकर है तो प्राकृतिक सौन्दर्य को भी चित्रकला

में सम्यक रूपेण अभिव्यक्त किया गया है। इस हवेली की चित्रकला शैली पर ईरानीऔर राजपूत संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है। हवेली के ऊँचे प्रवेश द्वार, विशाल चौक, झरोखे, छोटी–बड़ी खिड़कियॉ और भित्तियों पर चित्रांकन आदि ने समृद्ध संस्कृति एवं सांस्कृतिक वैभव को मानव समाज में एकता, समन्वय, उदारता, दृढ़ता आदि की भावना को आत्मसात कर नये आयाम स्थापित किये। मुगलकाल में सामंजस्य की इस भावना के कारण ईरानी और राजपूत संस्कृति का समन्वित स्वरूप भित्ति चित्रांकन में स्पष्ट परिलक्षित हुआ। यह हवेली देशी–विदेशी यात्रियों के लिये आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *कला संस्कृत भाषा से संबंधित शब्द है इसकी व्युत्पति 'कल्' धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ है प्रेरित करना। सुन्दर, मधुर, कोमल और सुख देने वाली चित्रकला का हुनर अथवा कौशल प्रतीत होता है। फ्रेंच भाषा में कला को **आर्ट** तथालेटिन में **आर्टम** से व्यक्त किया गया। कला सत्यम, शिवम और सुन्दरम की अभिव्यक्ति है। सम्यक् रूप से अंलकृत चित्र संस्कृति का आधार है जिसके द्वारा मौलिक समन्वयक द्वारा आन्तरिक शुद्ध भाव को अभिव्यक्त करना है। चित्रकला संस्कृति भूत, भविष्य और वर्तमान में प्रवाहित होने वाली अजस्त्र धारा है जो जीवन में आनन्द और सुख की अनुभूति कराती है।*
   प्रताप, रीता; भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, जयपुर, 2014, पृष्ठ 4
2. *हवेली शब्द अरबी हवली से लिया गया है जिसका अर्थ है निजी स्थान, जो मुगल सम्राज्य में प्रचलित था। राजपूताना में हवेली शब्द का प्रयोग आर्थिक दृष्टि से समृद्ध सेठ, साहूकारों द्वारा निर्मित आरामदायक आवास को हवेली कहा गया जिनकी स्थापत्य कला राजपूत और ईरानी शैली से संबंधित रही। इन्होंने हवेली के भित्तिचित्रों में समसामयिक सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक चित्रों को विभिन्न रंगों के द्वारा समायोजित किया।*
   शर्मा, आनन्द कुमार; राजस्थान की कला, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 70
3. *प्रताप, रीता; भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, जयपुर, 2014, पृष्ठ 17–18*
4. *जयपुर राज्य का सबसे बड़ा ठिकाना श्रीकर (सीकर) था जो पूर्व में नेहरावती नाम से जाना जाता था। यह सीकर की राजधानी थी। सीकर शेखावटी क्षेत्र में स्थित है। इसका आदिम नाम 'बीयर भानकावास' था। इसकी स्थापना 1687 ई. में की।*
5. *यह चित्रकारी गीले चूने के ताजा पलस्तर पर की जाती है। चूना वायु की कार्बनडाइआक्साइड से क्रिया करता है और दिवार की सतह पर क्रिस्टलीय कैल्शियम कार्बोनेट की एक चमकीली परत बन जाती है जो कि आधार से रंजकों (Pigment) को इस तरीके से जोड़ती है जैसे कि वह पानी में पूर्णतः घुलनशील हैं और साथ ही साथ उन्हें वास्तविक फ्रैस्को चित्रकारी के समान आकृत्ति देती है। फ्रैस्को चित्रकारी केवल उस भित्तिचित्र तकनीक के लिये लागू होती है जहॉ रंग ताजा और गीले चूना पलस्तर पर लगाये जाते हैं।*
   अग्रवाल, ओ.पी.; भित्तिचित्रों की जॉच और संरक्षण, नई दिल्ली, 2002, आई.एस.बी.एन. 81–7574–122–8, पृष्ठ 15
6. *चित्रकार जब भित्ति के सुखे पलस्तर पर रंगो के द्वारा चित्रकारी करता है तो इसे सैको या सुखी चित्रकारी कहा जाता है। कभी–कभी उन चित्रों के लिये फ्रैस्को–सैको नाम भी प्रयोग में लाया जाता है। जब यह ताजा, गीले चूना पलस्तर पर की जाती है। सैको चित्रकारी में सूखे पलस्तर पर चिपकाने के लिये सरेश या वनस्पति गोंद जैसे स्तम्भक–घोल को रंग में मिलाया जाता है।*
7. *अग्रवाल, ओ.पी.; भित्तिचित्रों की जॉच और संरक्षण, नई दिल्ली, 2002, आई.एस.बी.एन. 81–7574–122–8, पृष्ठ 15*
8. *नवज्योति; 1 मार्च, 1937, पृष्ठ 2 सीकर में हवेली स्थापत्य कला।*
9. *सक्सेना, संगीता; वस्त्र एवं परिधान निर्माण के मूलाधर, जयपुर, 2012, पृष्ठ 230*
10. *मंगल राधा मोहन; मानव के आभूषणों का इतिहास, जयपुर, 1974, पृष्ठ 28–29*
11. *जैकब ओबर्ट; शेखावटी की हवेली स्थापत्य कला, दिल्ली, 1988, पृष्ठ 51*